CLASS → ② दिल्ली सल्तनत (Delhi Sultanate) **

- दिल्ली सल्तनत को पढ़ने से पहले हमे विदेशी आक्रमण (Foreign Invasions) को पढ़ना है।

- क्योंकि भारत में जो इस्लामिक शासक शुरु हुआ वो धीरे-धीरे शुरु हुआ → विदेशी आक्रमण के साथ·

* विदेशी आक्रमण *

प्रथम आक्रमण ÷ अरब आक्रमण

- प्रथम → मुस्लिम आक्रमण / इस्लामिक आक्रमण हुआ ——→ मोहम्मद बिन कासिम का (सबसे पहला) (712 AD ई· में) gmp.

- कहाँ पर होता है ——→ सिंध प्रान्त (जो पहले भारतीय Subcontinent का ही भाग हुआ करता था) यहाँ पर आक्रमण करता है मोहम्मद बिन कासिम

- सिंध प्रांत पर शासन कर रहे होते है राजा दाहिर (gmp.) जोकि एक ब्राह्मण शासक होते है।

- इनको मार देता है मोहम्मद बिन कासिम ; इनका गला काट के ले जाता है अपने Home Country → अरब ; यानि ये अरब से आया था।

- क्यों आया था ? ——→ ये माना जाता है कि यहाँ से व्यापार का route था ; व्यापार करते थे जो Arabians थे।

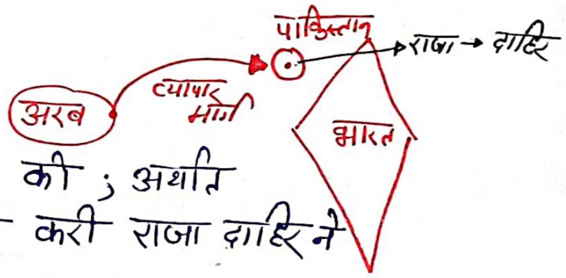

- यहाँ पर राजा दाहिर ने कुछ छेड़छाड़ की ; अर्थात जो traders (व्यापारी) होते थे उनकी हत्या करी राजा दाहिर ने

- जिसकी वजह से ~~अरब~~ के उस समय के जो समकालीन शासक थे उन्होंने अपने मिलेट्री (Military Commander) ——→ मोहम्मद बिन कासिम को यहाँ पर भेजा और राजा दाहिर को मरवाया।

अगला आक्रमण ÷ प्रथम तुर्की आक्रमण

- प्रथम तुर्की आक्रमण ——→ महमूद गजनवी द्वारा किया गया (998 – 1030 ई· तक)
  - तुर्की आक्रमण का मतलब = तुर्कमेनिस्तान (जो अफगानिस्तान के ऊपर वाला region है।)
  - → इसका ये कतई अर्थ नही है कि ये महमूद गजनवी तुर्की से आया था।

- महमूद गजनवी ने 17 बार भारत पर आक्रमण किया। (माना जाता है)
- आक्रमण का मुख्य कारण → बदला और लूट (Revenge and Plunder)

बदला अपने पिता सुबुक्तगीन की मृत्यु का लेना जो उसने लिया जयपाल को हराकर जयपाल को मारा नहीं, जयपाल ने खुद ही suicide कर लिया इतना ज्यादा लज्जित होने के बाद

लूट इसीलिए क्योंकि वो मध्य एशिया (Central Asia) पर शासन करना चाहता था; मक्का में वो अपना शासन स्थापित करना चाहता था जिसकी वजह से उसने लूट मचायी

- 17 आक्रमणों में सबसे बड़ा जो आक्रमण/लूट हुआ वो सोमनाथ मंदिर में हुआ (1025 ई.)
- इसका पहला आक्रमण माना जाता है → 1001 ई. में
- सोमनाथ मंदिर पर हुआ आक्रमण इसका second last attack (आक्रमण) था।
- अंतिम आक्रमण → 1027 ई. में किया

माना जाता है कि सोमनाथ मंदिर से जो सोना बोरा लूट के आ रहा था, तो सोने के गेट को (लौटते हुए में) जाट समुदाय की एक tribe → खूंखार tribe; तो इस खोखर tribe ने महमूद गजनवी को लूट लिया। और काफी तंग करके भेजा → गजनी

- जिसका बदला लेने आया था महमूद गजनवी → 1027 ई. में
- इसके बाद इसकी 1030 ई. में हो गयी मृत्यु → (DEATH)

महमूद गजनवी के समय पर लेखक:

- (1) फिरदौसी ने → 'शाहनामा' लिखी
- (2) अल-बरूनी → तहकीक-ए-हिन्द

अगला आक्रमण: द्वितीय (2nd) तुर्की आक्रमण

- द्वितीय तुर्क आक्रमण → मोहम्मद गौरी का आक्रमण हुआ [1175-1206 AD] Imp.
- 1175 (Imp.) में सबसे पहला आक्रमण → मुल्तान (Imp.) में किया।

PARMAR SSC

→ फिर 1178 ई में गुजरात वाले क्षेत्र से दिल्ली आना चाहता था।

- 2 Root थे दिल्ली आने के
  - → ऊपर से सिंध प्रांत से
  - → नीचे वाले क्षेत्र से [✓] (मोहम्मद गौरी ने चुना)

→ जब 1178 में ये आक्रमण करने आया तो उस समय के गुजरात के शासक भीम द्वितीय (II) थे। उन्होंने इस पर पलटवार आक्रमण किया और मोहम्मद गौरी को बहुत बुरी तरह से हराकर वापस भेज दिया।

→ जब दुबारा इसने आक्रमण किया तो उस समय दिल्ली के शासक जो थे वो थे → पृथ्वीराज राज चौहान या पृथ्वीराज (III) (Imp.), अर्थात चौहान वंश का शासन था दिल्ली मे।

→ ये माना जाता है कि पृथ्वीराज चौहान और मोहम्मद गौरी के बीच दो (2) मुख्य युद्ध हुए

→ चंदबरदाई एक लेखक थे जोकि पृथ्वीराज चौहान के दरबार में थे जिन्होंने लिखी → पृथ्वीराज रासो

- → इस पृथ्वीराज रासो के अनुसार, मोहम्मद गौरी ने total 17 बार आक्रमण किया।
- → इन 17 बार मे (16 बार) या पूरे के पूरे 17 बार हार मिली मोहम्मद गौरी को
- → फिर तराईन का प्रथम युद्ध
- → तराईन का द्वितीय युद्ध

हुआ जिसमे तराईन के प्रथम युद्ध में जोकि 1191 ई. मे होता है।

→ तराइन एक जगह है दिल्ली और लाहौर के बीच

मोहम्मद गौरी — पृथ्वीराज चौहान के बीच मे

→ Imp. 1191 (ई) → तराइन का प्रथम युद्ध → जीते → पृथ्वीराज चौहान

→ Imp. 1192 (ई) → तराइन का द्वितीय युद्ध → जीते → मोहम्मद गौरी

→ आक्रमण का मुख्य कारण (मोहम्मद गौरी के) → (Territorial Expansion करना बंगाल तक)

PARMAR SSC

पृथ्वीराज रासो के अनुसार, एक राजकुमारी थी संयोगिता जोकि राजा जयचंद की पुत्री थी जो गढ़वाल के शासक थे; चौहान जैसे एक राजपूत वंश था वैसे ही गढ़वाल भी राजपूत वंश था।

गढ़वाल → [राजपूत वंश थे]
→ कन्नौज में lead कर रहे थे

मानो जाता है जयचंद की बेटी संयोगिता को उठाकर ले गए थे पृथ्वीराज चौहान; और पहले से ही इनके बीच में टकराव (Conflict) चले आ रहे थे।

इसीलिए राजा जयचंद ने ही मोहम्मद गोरी को आमंत्रित (Invite) किया था आक्रमण के लिए।

राजा जयचंद ने पृथ्वीराज चौहान की हार के बाद एक महीने की/4 सप्ताह की एक Ultimate party घोषित की।

लेकिन बहुत थोड़े से ही समयान्तराल के अंदर मोहम्मद गोरी ने दुबारा आक्रमण किया और जयचंद के साथ चंदावर का युद्ध लड़ा।

Trick → चंद = चंदावर
→ (जयचंद)

1194 ई. में → चंदावर का युद्ध
- जीता :- मोहम्मद गोरी
- हारा :- राजा जयचंद

दिल्ली सल्तनत (Delhi Sultanate) [1206-1526 ई. तक]

दिल्ली सल्तनत में बहुत सारे वंश आए; बहुत सारी Dynasties ने शासन किया।

* जिस तरीके से मगध साम्राज्य में बहुत वंशों ने शासन किया
  - → हर्यक वंश
  - → शिशुनाग वंश
  - → मौर्य वंश
  - → शुंग वंश
  - → कण्व वंश

  ये सारे वंश हमने देखे थे

इसी तरह →

* दिल्ली सल्तनत में बहुत सारे वंश आए
  1. गुलाम वंश (1206-1290 ई. तक)
  2. खिलजी वंश (1290-1320 ई. तक)
  3. तुगलक वंश (1320-1414 ई. तक)
  4. सैय्यद वंश (1414-1451 ई. तक)
  5. लोदी वंश (1451-1526 ई. तक)

  Slave, Khilji, Tughlaq, Sayyad, Lodhi
  Trick :- सख्त सा लौण्डा

जब मोहम्मद गोरी जीत जाता है यहाँ पर तो वो वापस चला जाता है → Ghaznavid Empire में

PARMAR SSC

→ और दिल्ली में पूरी power कुतुबउद्दीन ऐबक को दे देता है।

→ कुतुबउद्दीन ऐबक मोहम्मद गौरी का भरोसेमंद Military Commander था। जिसने सहायता की थी जीतने में (तराइन के युद्ध में)

→ कुतुबउद्दीन ऐबक मोहम्मद गौरी का एक गुलाम/दास (Slave) था।

→ इसके अलावा भी और कई सारे गुलाम/दास थे
- → याल्दोज
- → कुबाचा
- → बख्तियार खिलजी

- याल्दोज को → को → गजनी दे दिया गया।
- कुबाचा को → को → काबुल दे दिया गया।
- बख्तियार खिलजी → को → Eastern India (पूर्वी भारत) वाला भाग दे दिया गया।

→ ये माना जाता है कि बख्तियार खिलजी ने ही नालंदा यूनीवर्सिटी को Destroy भी किया था।

→ मोहम्मद गौरी ने अपना अंतिम आक्रमण → 1206 ई. में किया था। और वापिस जब जा रहा था तो वहीं मारा जाता है।

→ कुतुबउद्दीन ऐबक ने अपना शासन शुरु कर दिया था → लाहौर में

गुलाम वंश (1206 – 1290 ई. तक) :→

→ कुतुबउद्दीन ऐबक ने अपना Rule शुरु किया → लाहौर में

→ लाहौर → इसकी राजधानी थी (कुतुबउद्दीन ऐबक की)

* कुतुबउद्दीन ऐबक (1206- 1210 ई तक) *

→ कुतुबउद्दीन ऐबक को लाखबख्श (लाखों का दाता) की उपाधि दी गयी।

→ 1210 में चौगान या पोलो खेलते समय इनकी मृत्यु हो गई।
(घोड़े पर बैठकर खेला जाता है।)

→ कुतुबउद्दीन ऐबक ने 2 मस्जिदो का निर्माण करवाया
- → दिल्ली में कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद।
- → अजमेर में अढ़ाई दिन का झोपड़ा।

PARMAR SSC

→ इसने (कुतुबउद्दीन ऐबक) ने सूफी संत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के सम्मान में कुतुबमीनार का निर्माण भी शुरू कराया।

→ सिर्फ शुरू करवाया था ये पूरा नहीं करवा पाया था → इसके Successor जैसे इल्तुतमिश और फिरोजशाह तुगलक ने करवाया था।

→ मुख्य काम करवाया था इसी के गुलाम / दास (Slave) → इल्तुतमिश ने इसीलिए ये गुलाम वंश कहलाया। इसी को मामलूक वंश भी कहते हैं, सारे शासक इल्बारी के थे

* शमसुद्दीन इल्तुतमिश (1211-1236 ई. तक) *

→ इसी को (शमसुद्दीन इल्तुतमिश) को ही गुलाम वंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है

→ इसी ने मजबूत (Consolidate) किया इस पूरे गुलाम वंश को या फिर दिल्ली सल्तनत को। ये गुलाम और दामाद था कुतुबउद्दीन ऐबक का।

→ इल्तुतमिश ने लाहौर के स्थान पर दिल्ली को राजधानी बनाया।

→ इल्तुतमिश ने दिल्ली सल्तनत को चंगेज खान के प्रकोप से बचाया।
↳ (मंगोलियन)

→ इल्तुतमिश ने चाँदी का सिक्का (टंका) और ताँबे का सिक्का (जीतल) चलाया।

→ इल्तुतमिश ने इक्ता प्रणाली को स्थापित किया / आयोजन किया (Organized).
↳ A piece of land (एक जमीन का टुकड़ा)

→ इस समय पर तुर्क ए चहलगानी System था।

→ इल्तुतमिश ने दासो का एक आधिकारिक कुलीन वर्ग स्थापित किया जिसे
→ चहलगानी चालीसा (40 लोगों का समूह) के नाम से जाना जाता है।

* रजिया सुल्तान (1236-1240 ई.)

→ ये इल्तुतमिश की बेटी थी।

→ भारत में शासन करने वाली प्रथम महिला और एकमात्र मुस्लिम महिला थी।

PARMAR SSC

- भटिंडा के गवर्नर अल्तुनिया ने रजिया की अधीनता स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। रजिया ने याकूत के साथ अल्तुनिया के विरुद्ध चढ़ाई की।
- अल्तुनिया ने याकूत की हत्या करवा दी और रजिया को कैद कर लिया।
- इसके बाद रजिया और अल्तुनिया एक दूसरे से शादी कर लेते हैं
- 1240 ई. में रजिया एक षडयंत्र की शिकार हो गई और कैथल (हरियाणा) के पास उसकी हत्या कर दी गई।
  → खोक्खर जनजाति द्वारा
- उसने संरक्षण दिया → मिन्हाज-अल-सिराज
  ↓
  * लिखा :- तबकात-ए-नासिरी

गियासुद्दीन बलबन (1266-1287 ई. तक)

- गियासुद्दीन बलबन ने चालीसा की शक्ति को तोड दिया और ताज की प्रतिष्ठा बहाल की यानि Monarchy establish की।
- गियासुद्दीन बलबन नायब की उपाधि पर तब था जब रजिया की मृत्यु हुई और रजिया का भाई नसीरुद्दीन महमूद को गद्दी पर बैठाने में सहायता की बलबन ने। और नायब (Naib) की position दी नसीरुद्दीन महमूद ने।
- जो चालीसा हुआ करता था उसने मना किया कि बलबन को ये पद मत दो तो ये position (पद) गया Indian muslim → इमाउद्दीन रेहान को
- बलबन ने सैन्य विभाग दीवान-ए-अर्ज की स्थापना की।
- बलबन ने जिल-ए-इलाही की उपाधि धारण की।
  → भगवान की परछाई है।
- बलबन ने सिजदा (सम्राट के सामने साष्टांग प्रणाम) और पाइबोस (राजा के पैरो को चूमना) को अभिवादन के सामान्य रूप में पेश किया।
- अंतिम शासक :- खैकुबाद